जनसत्ता

सेहत की चिंता

किसी देश की संपन्नता इस बात से भी आंकी जाती है कि वहां के लोग कितने स्वस्थ और खुशहाल हैं। भारत में स्वास्थ्य स्थितियों को लेकर समय-समय पर होने वाले सर्वेक्षणों में चिंताजनक आंकड़े आते रहते हैं। यहां मधुमेह, रक्तचाप जैसी जीवनशैली संबंधी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, जो अधिक चिंता की बात है। ऐसे में प्रधानमंत्री का 'फिटनेस इंडिया आंदोलन' स्वास्थ्य के मोर्चे पर सकारात्मक नतीजे देने वाला साबित हो सकता है। पहले कार्यकाल में भी उन्होंने 'फिटनेस चैलेंज' देकर कुछ खिलाड़ियों और अभिनेताओं को उकसाया था, ताकि देश के युवा उससे प्रेरणा लें और अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत हों। योग दिवस के जरिए भी यही जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया गया। अब तो अस्पतालों में भी चिकित्सा के साथ-साथ लोगों को योग करने, व्यायाम करने आदि की प्रेरणा दी जाती है। हालांकि सेहत ठीक रहने की प्रेरणा प्राचीन समय से दी जाती रही है। कहावत ही है कि पहला सुख नीरोगी काया। पर जैसे-जैसे विकास और जीवन में सुख-सुविधाएं बढ़ती गईं, लोग इसके महत्त्व को भूलते गए या फिर कुछ व्यस्तताओं के चलते अपेक्षित ध्यान नहीं दे पाते। उस परंपरा को जीवित करना, लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान करना आज बड़ी जरूरत बन गई है।

नागरिकों के स्वास्थ्य का ध्यान रखने का अर्थ सिर्फ यह नहीं होता कि स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाया जाए, स्वास्थ्य सुविधाएं ठीक की जाएं, सर्वसुलभ कराई जाएं। सरकार का काम यह भी है कि वह लोगों को स्वस्थ जीवन जीने की स्थितियां मुहैया कराए, उनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करे। आंकड़े बताते हैं कि सरकारें जितना पैसा स्वास्थ्य योजनाओं पर खर्च करती हैं, स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने पर करती हैं, उसमें कमी आ जाए, तो दूसरी योजनाओं पर बेहतर तरीके से खर्च किया जा सकता है। इसलिए दुनिया के तमाम देशों में इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि लोगों में जीवनशैली संबंधी बीमारियों के प्रति सतर्कता पैदा की जाए। आंकड़े यह भी बताते हैं कि सरकारों को जितना पैसा गंभीर बीमारियों के इलाज पर नहीं खर्च करना पड़ता उससे कहीं ज्यादा पैसा जीवनशैली संबंधी समस्याओं पर काबू पाने के लिए करना पड़ता है। जीवनशैली संबंधी बीमारियां जैसे रक्तचाप, मधुमेह, अस्थमा, हड्डियों की कमजोरी वगैरह को सामान्य रूप से स्वास्थ्य के प्रति सजग रह कर अपनी दिनचर्या में सुधार लाकर काबू किया जा सकता है। नियमित व्यायाम, योगासन आदि से शरीर में पैदा हुई अनियमितताओं को आसानी से दुरुस्त किया जा सकता है। इस तरह इन बीमारियों पर व्यय होने वाले धन की बचत होगी और उसका उपयोग दूसरी बुनियादी सुविधाओं के मद में किया जा सकता है।

विचित्र है कि जिन समस्याओं पर खुद सतर्क रह कर काबू पाया जा सकता है, उनके लिए भी लोग सरकारों का मुंह जोहते रहते हैं। स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं बेहतर न होने, चिकित्सा पर खर्च बढ़ते जाने, दवाओं की कीमतें नियंत्रित न होने आदि की शिकायतें आमतौर पर सुनने को मिल जाती हैं। मगर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि शरीर में अनेक तरह की अनियमितताओं को हम खुद अपनी लापरवाही से पैदा कर लेते हैं, जो बाद में गंभीर बीमारी का कारण बनती हैं। अगर हम अपने खानपान और दिनचर्या, सामान्य व्यायाम वगैरह का ध्यान रखें, तो कई समस्याओं पर खुद काबू पा सकते हैं। ऐसे में प्रधानमंत्री का 'फिटनेस इंडिया अभियान' स्वास्थ्य के मामले में बेहतर नतीजे की उम्मीद जगाता है।

सोने की चमक

पिछले तीन महीने में सोने के दाम जिस तेजी से बढ़े हैं उसे देख कर अब हर निवेशक यही सोच रहा होगा कि काश सोने में पैसा लगाया होता! सोना अब चालीस हजार रुपए प्रति दस ग्राम तक जा पहुंचा है। भारत में सोने के दाम का यह रिकार्ड स्तर है। इस बात की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि आने वाले दिनों में सोना कोई नया कीर्तिमान कायम कर दे और बयालीस-तियालीस हजार रुपए तोले तक चला जाए। सोने के रोजाना बढ़ते दाम से जहां निवेशकों की चांदी हो गई है, वहीं कारोबारियों और खरीदारों के माथे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई पड़ रही हैं। देश भर के सर्राफा बाजारों का रुख अभी जो हालात बयां कर रहा है उसे देखते हुए तो यही लग रहा है कि जल्दी ही सोना नीचे नहीं आने वाला। हालांकि अब त्योहारी मौसम भी आ रहा है और शादी-ब्याह का भी। ऐसे में सोने की मांग काफी बढ़ेगी। अगर सोना सस्ता नहीं होगा तो लोगों की जेब ढीली होगी। मिलावटी सोने का कारोबार बढ़ेगा और सोने की तस्करी करने वालों की भी मौज होगी।

भारत सोने के मामले में पूरी तरह आयात पर निर्भर है। इस वक्त अंतरराष्ट्रीय बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपए की हालत कमजोर चल रही है। जाहिर है, सोना खरीदने के लिए ज्यादा पैसा देना पड़ेगा। इसका असर घरेलू बाजार पर पड़ता है। फिर, इस बार बजट में सोने पर आयात शुल्क को दस से बढ़ा कर साढ़े बारह फीसद कर दिया गया था। इससे भी सोने के दाम बढ़ना स्वाभाविक था। इसके अलावा और भी कई कारण हैं जिनकी वजह से सोने के दाम का ग्राफ तेजी से चढ़ रहा है। रिजर्व बैंक इस साल में चार बार नीतिगत दरों में कटौती कर चुका है। इसका सबसे ज्यादा फायदा बैंकों और कर्ज लेने वालों को हुआ और इससे भी सोना महंगा होता गया। माना जा रहा है कि ब्याज दरें कम होने से कर्ज बाजार में जान आएगी और खरीदार व निवेशक सोना खरीदने की ओर रुख करेंगे। इससे सोने की मांग और कीमत दोनों बढ़ेंगी। इस वक्त बाजार में पिछले कुछ महीनों से जो मंदी का माहौल बना है उसका असर शेयर बाजारों पर भी साफ दिख रहा है। रियल एस्टेट बाजार का तो पिछले तीन साल से दम निकला पड़ा है। ऐसे में निवेशकों को सबसे ज्यादा मुनाफा सोने में ही दिख रहा है।

सोना जिस तरह से आसमान छू रहा है उससे खरीद तो मुश्किल हो ही गई है, सोने में मिलावट और तस्करी भी बढ़ रही है। यह चिंता की बात है। हाल में विदेशी बाजारों में नकली ब्रांड वाली सोने की छड़ों को खपाने की जो खबरें आ रही हैं वे चौंकाने वाली हैं। ऐसे में सवाल है कि भारत के घरेलू बाजार में बाहर से जो सोना आ रहा है वह कहीं मिलावटी तो नहीं है, शुद्ध है तो कितना, ये सवाल लोगों के मन में उठने लाजिमी हैं। सोना तैयार करने वाली रिफाइनरियों, कारोबारियों और बैंकों के सामने यह गंभीर चुनौती है कि मिलावटी सोने के कारोबार पर कैसे अंकुश लगे। मिलावटी सोना काफी सस्ता मिल जाता है और आमतौर पर बाजार में शादियों के सीजन में खपा दिया जाता है। ऐसे में गैरकानूनी तरीके से बाहर से सोना लाने वालों पर निगरानी की जरूरत है।

कल्पमेधा

देवता न बड़ा होता है, न छोटा, न शक्तिशाली होता है, न अशक्त। वह उतना ही बड़ा होता है जितना बड़ा उसे उपासक बनाना चाहता है।

-हजारीप्रसाद द्विवेदी

ब्रह्मांड में जीवन की उम्मीदें

निरंकार सिंह

हाकिंग दूसरे ग्रहों पर जीवन की उम्मीदों को मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि आकाशीय पिंडों की टक्कर या परमाणु युद्ध के कारण हमारी सभ्यता नष्ट हो सकती है। इसलिए मानव सभ्यता को बचाने के लिए हमें ब्रह्मांड में जीवन की संभावनाओं की तलाश करनी चाहिए, ताकि मानव जाति का भविष्य सुरक्षित रहे।

जीवन के लिए सबसे अनुकूल ग्रह हमारी पृथ्वी है। वैज्ञानिक लगातार अध्ययन कर अन्य ग्रहों पर भी जीवन की संभावनाएं तलाश रहे हैं। अब एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि पृथ्वी के आकार वाले बर्फीले ग्रहों पर भी कुछ क्षेत्र रहने योग्य हो सकते हैं। अब तक वैज्ञानिक यह सोचते रहे हैं कि पृथ्वी जैसे आकार वाले जमे हुए ग्रहों पर जीवन मुमकिन ही नहीं हो सकता है क्योंकि इन ग्रहों पर मौजूद महासागर जमे हुए हैं और अत्यधिक ठंड जीवन की संभावनाओं को खत्म कर देती है। लेकिन नया अध्ययन हमारी उस सोच को चुनौती देता है जिसमें हमें यह लगता है कि अत्यधिक ठंडे और गर्म ग्रहों में जीवन संभव ही नहीं हो सकता। जियोफिजिकल रिसर्च जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, बर्फीले ग्रहों की भूमध्य रेखाओं के पास के क्षेत्रों में रहने योग्य तापमान भी मौजूद हो सकता है। कनाडा की टोरंटो यूनिवर्सिटी में खगोल और भौतिक विज्ञानी एडिव पैराडाइस ने बताया कि हमारी खोज में कुछ ऐसे ग्रह मिले हैं जो बर्फीले हैं। परंपरागत रूप से इनको रहने योग्य नहीं माना जा सकता, लेकिन नया अध्ययन यह सुझाव देता है कि शायद वे ग्रह रहने योग्य हो सकते हैं। शोधकर्ताओं ने बताया कि ये रहने योग्य क्षेत्र एक तारे की विशिष्ट दूरी से प्रभावित होते हैं, जिसकी वजह से वहां का तापमान सामान्य और पानी तरल अवस्था में मौजूद हो सकता है।

अब तक के अध्ययनों से पता चलता है कि हमारी पृथ्वी भी दो से तीन बार हिम युग से गुजरी है लेकिन फिर भी यहां जीवन बच गया। हिम युग में भी सूक्ष्म जीव बचे रहे। पैराडाइस का कहना है कि पृथ्वी अपने हिमयुग के दौरान भी रहने योग्य थी। यहां जीवन हिमयुग से पहले पनपा था। यह हिमयुग और उसके बाद भी बरकरार रहा। वैज्ञानिकों ने बर्फीले ग्रहों में रहने योग्य कारणों का अध्ययन करने के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम का सहारा लिया, जिसमें सूर्य की रोशनी की मौजूदगी और क्षेत्रों के आकार के आधार पर मॉडल बनाए गए। सबसे खास चीज जिस पर वैज्ञानिकों ने ध्यान दिया, वह कार्बन डाइआक्साइड थी। कार्बन डाइ आक्साइड की वजह से ही ग्रहों में गर्मी रहती है और जलवायु परिवर्तन भी होता है। इसके बिना ग्रहों के महासागर जम जाते हैं, बेजान हो जाते हैं। जब वायुमंडल में कार्बन डाइआक्साइड का स्तर कम हो जाता है तो ग्रह स्नोबॉल यानी बर्फीले हो जाते हैं। लेकिन जब इन ग्रहों पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है तो इनकी भूमध्य रेखाओं के आसपास के क्षेत्रों में बर्फ के पानी बनने की संभावना प्रबल हो जाती है। इस आधार पर भी कहा जा सकता है कि बर्फीले ग्रहों पर जीवन संभव हो सकता है।

नासा के वैज्ञानिकों ने हाल में एक ऐसा ग्रह खोजा है जो रहने योग्य हो सकता है। यह ग्रह हमारे सौर मंडल के बाहर मिला है। हमारी धरती से यह करीब इकतीस प्रकाश वर्ष दूर है। इस सुपर अर्थ ग्रह को 'जीजे 357 डी' नाम दिया गया है। इस ग्रह की खोज नासा के अंतरिक्ष टेलीस्कोप- ट्रांजिटिंग एक्सोप्लेनेट सर्वे सैटेलाइट (टीईएसएस) के जरिए इस साल के शुरू में की गई थी। अमेरिका की कॉर्नेल यूनिवर्सिटी में इस बारे में शोध करने वाले दल की सदस्य लिजा कलटेनेगर के अनुसार यह उत्साहजनक है कि धरती के सबसे करीब पहली सुपर अर्थ का पता चला है। यह ग्रह आकार में धरती से बड़ा है। इस पर घना वातावरण देखने को मिला है और इसकी सतह पर धरती की तरह पानी तरल रूप में हो सकता है। टेलीस्कोप की मदद से इस पर जीवन के संकेतों की पहचान का प्रयास चल रहा है। ट्रांजिटिंग एक्सोप्लेनेट सर्वे सैटेलाइट (टीईएसएस) को नासा ने ग्रहों की खोज के लिए पिछले साल 18 अप्रैल को छोड़ा था। यह दो साल तक काम करता रहेगा। स्पेन के इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स ऑफ द कैनरी आइलैंड और यूनिवर्सिटी ऑफ ला लागुना के खगोलविदों ने कहा है कि उन्होंने जीजे 357 सिस्टम का पता लगाया है। इसमें कुल तीन ग्रह हैं। इनमें एक ग्रह (जीजे 357डी) पर रहने के लिए अनुकूल परिस्थितियां हो सकती हैं। इसके अलावा इसमें एक बौना ग्रह (जीजे 357) भी है जो सूर्य के आकार का एक तिहाई हिस्सा लगता है। इसी साल फरवरी में ही टीईएस

सैटेलाइट ने पता लगाया था कि जीजे 357 हर 3.9 दिनों में थोड़ा मंद हो रहा था। वैज्ञानिकों ने कहा कि यह इस बात का प्रमाण है कि इसके आसपास कोई ग्रह चक्कर का लगा रहा है। नासा के गोडार्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर के अनुसार यह ग्रह जीजे-357 बी था जो पृथ्वी से लगभग बाईस फीसद बड़ा है।

मशहूर वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग लंबे समय से दूसरी दुनिया में जीवन की तलाश पर जोर देते रहे थे। अपने जीवन भर के गणित और खगोल भौतिकी के अध्ययन से उन्होंने कई ऐसे निष्कर्ष निकाले जो दूसरी दुनिया में जीवन की संभावनाओं का पुरजोर समर्थन करते थे। हाकिंग दूसरे ग्रहों पर जीवन की उम्मीदों को मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि आकाशीय पिंडों की टक्कर या परमाणु युद्ध के कारण हमारी सभ्यता नष्ट हो सकती है। इसलिए मानव सभ्यता को बचाने के लिए हमें ब्रह्मांड में जीवन की संभावनाओं की तलाश करनी चाहिए, ताकि मानव जाति का भविष्य सुरक्षित रहे। इसके लिए उन्होंने रूसी अरबपति यूरी मिल्नर की सहायता से दस करोड़ अमेरिकी डालर की लागत वाले एक दस वर्षीय अभियान की शुरुआत की थी। इसे दूसरे ग्रहों पर जीवन की खोज करने का अभी तक का सबसे बड़ा अभियान माना जाता है। इसे 'ब्रेकथू मिशन' नाम दिया गया। इस अभियान में पृथ्वी के करीब स्थित लाखों तारों से आने वाले संकेतों को सुना जा रहा है। इस अभियान की खूबी यह है कि पुराने अभियानों की तुलना में इस अभियान का दायरा दस गुना बढ़ाया गया है। प्रोफेसर हाकिंग के इस मिशन में पृथ्वी के इर्द-गिर्द स्थित तारों के पास जीवन की संभावना की तलाश के लिए रेडियो तरंगों को भेजा जाएगा।

इसके लिए दुनिया के दो सबसे शक्तिशाली रेडियो टेलीस्कोप, ग्रीन बैंक टेलीस्कोप और पार्क्स टेलीस्कोप की मदद ली जाएगी। एक तीसरा टेलीस्कोप दूसरी दुनिया के संकेतों का पता लगाएगा। दुनिया भर का वैज्ञानिक समुदाय 1960 से ही सामूहिक प्रयासों के जरिए सर्च फॉर एक्ट्राटेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस (सेटी) कार्यक्रम के तहत अंतरिक्ष के अन्य ग्रहों पर जीवन की तलाश में लगा है। इसकी शुरुआत प्रोजेक्ट ओज्मा (1960) से हुई। शुरुआती दौर में इस कार्यक्रम के तहत कुछ समय के लिए रेडियो टेलिस्कोप के जरिये रेडियो तरंगों को भेजा जाता था।

खगोल वैज्ञानिकों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम के अनुसार इंसान ब्रह्मांड में मौजूद ऐसे कई ग्रहों पर जिंदगी जी सकता है जो पृथ्वी से ही मिलते-जुलते हैं। आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों का दावा है कि ऐसे ग्रह रहने लायक हैं कि नहीं यह पता लगाना खगोल विज्ञान के लिए एक उपलब्धि है। इस टीम की अगुआई करने वाले चार्ली लाइनवीबर के अनुसार हाल ही में कई ऐसे ग्रह पाए गए हैं जहां ऐसा माहौल पाया गया है कि जिंदगी जी जा सके। इसमें कई ग्रह ऐसे हैं जो एक जैसे हैं और पृथ्वी से मेल खाते हैं। इससे पृथ्वी के बाहर भी जिंदगी बसर करने की संभावनाएं बढ़ गई हैं। अब नए ग्रहों की खोज से वैज्ञानिकों के हौसले काफी बढ़ गए हैं। अब अंतरिक्ष में अन्य ग्रहों पर भी जीवन की तलाश में अभियान में तेजी आएगी।

शायद का चंगुल

विप्रम

शायद उसने... शायद मम्मी ने... शायद पापा ने..! कभी-कभी डॉक्टर से सुनने को मिलता है- 'रिपोर्ट आने दीजिए। शायद एलर्जी है। हो सकता है कोई संक्रमण हो।' रोजमर्रा की हमारी जिंदगी में न जाने कितने 'शायद' ने क्या कुछ घोल रखा है या इसने क्या कुछ से बावस्ता नहीं कराया! फिर भी यह 'शायद' हमारी जुबान से उतरता नहीं। पहले 'शायद' के कोई मायने नहीं समझे जाते थे। यों भी यह आम प्रचलित भाषा का शब्द नहीं माना जाता। इसके स्थान पर पहले 'संभव है' का प्रचलन था। 'अनुमान' का प्रयोग श्रेष्ठ माना जाता था। यह तो मौसम विभाग की अजब-गजब भविष्यवाणी ने 'संभव' शब्द की गरिमा को क्षीण कर दिया! गलत अनुमान बता कर 'शायद' के दरवाजे खोल दिए गए।

यानी यह कहा जा सकता है जब से वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी खरी न उतरी, तुक्के-अटकलों पर टिकने लगी, तब से यह 'शायद' अपने जोर के साथ चलन में आया और 'संभव-अनुमान' के प्रयोग की संस्कृति धूमिल हो गई। इसीलिए 'शायद' ने अपने बाजार भाव बढ़ा लिए। अब तो प्रतिस्पर्धा की दौड़ में हर कोई इसी की डोर थामे आगे बढ़ा जा रहा है। स्पर्धा का बीजगणित भी यही कहता है 'शायद'!

कुछ दिन पहले की बात है। नुक्कड़ वाले डॉक्टर से हमने दवा ली। उसने एक दिन की दवा दी थी। दूसरे दिन हम फिर गए, तब दवा कुछ बदल कर दी गई। कुछ फायदा न हुआ तो हमसे रहा न गया और पूछ लिया- 'डॉक्टर साहब! दवा का कुछ फर्क नहीं पड़ा। आखिर मुझे हुआ क्या है?' डॉक्टर ने गंभीर मुद्रा में कहा- 'देखते हैं। शायद वायरल है!' हम आश्चर्य में पड़ गए, जबकि गंभीर हमें होना चाहिए था। अगले दिन हमने एक अन्य डॉक्टर के क्लीनिक जाना उचित समझा। सोचा कि यहां शायद जल्दी आराम मिल जाएगा। कभी-कभी सस्ता डॉक्टर काम नहीं आता। बल्कि वह बीमारी लंबी खींच देता है। खैर, हमने नए डॉक्टर से भी पूछा कि हमें हुआ क्या है, तब डॉक्टर साहब ने कहा- 'कोई खास तकलीफ नहीं है आपको। मैंने कुछ जांच लिख दी हैं। देखते हैं, क्या निकलता है!'

हम समझ गए। घुमा-फिरा कर यहां भी 'शायद' का ही दौर चल निकला। अब 'शायद' का क्या इलाज हो? जीवन के हर मोड़ पर शायद ही शायद हो तब सही-गलत क्या सोचना! कभी हकीम-वैद्य नब्ज देख कर ही बता दिया करते थे कि मरीज को हुआ क्या है। आज के मेट्रो के जमाने में डॉक्टर अनुमान लगाते हैं। हजारों रुपए जांच में खर्च कराने के बाद पता चलता है कि माजरा क्या है या बीमार को रोग क्या है! जबकि हकीम-वैद्य मरीज के हाथ की नस पकड़ कर ही बता देते हैं कि उसने पिछली रात खाने में क्या खाया था। आयुर्वेद में 'कहा जा सकता है' शब्दावली नहीं चलती।

दुनिया मेरे आगे

दरअसल, 'शायद' की महिमा अपरंपार है। हमारे रोजमर्रा के जीवन में इसके बिना कोई काम पूरा नहीं होता। एक विद्यार्थी अपनी मेहनत को शायद के पैमाने से ही आंकता है। इसी में अपने परीक्षाफल का पूरा आकलन कर घर वालों को समझा देता है। अब तो ऐसा लगता है कि 'शायद' में ही सारी दुनिया समा रही है। हम कह सकते हैं कि वे जमाने लद गए, जब संभव-असंभव में जीते थे हम। अनुमान लगाना अब पिछड़ गए लोगों का काम रह गया है। अब तो केवल 'शायद' ही काम का है।

देखा जाए तो 'शायद' एक विकास की ओर इंगित करता है। इसके सहारे आगे बढ़ने वाले अच्छे-बुरे कयास-प्रयास लगा कर क्या कुछ नया कर जाते हैं, यह अवश्य ही विचारणीय है। प्रयत्नशील लोग समझ लेते हैं कि अगली बार शायद कुछ नया हो जाए। यह तो समानता का जमाना आ गया। लड़का-लड़की दोनों एक समान। पहले तो 'शायद' की ही अटकल में लड़कियां होती जाती थीं, जिससे देश का स्त्री-पुरुष अनुपात अच्छा तो नहीं, लेकिन संतोषजनक दिखता था।

बहुत कम लोगों को पता होगा कि ज्योतिषी भी 'शायद' की पोटली समेटे हुए होते हैं। जजमान अपनी दीन-हीन या महीन दशा के फलीभूत ज्योतिषी के मत्थे चढ़ जाता है। पूरी कृपादृष्टि इस शायद के चारों ओर घूम जाती है। मजे की बात कि कोई इन ज्योतिषी महोदय से पूछ कर देखे कि महाराज, आज आपके पास कितने जजमान आएंगे, इस सवाल का उत्तर शायद वे सीधा-सीधा न दें, बल्कि घुमा-फिरा कर दें। हो सकता है कुछ भी न बताएं। यहां भी सब 'शायद' के घुमाव हैं। अनिश्चितता को दर्शाने वाला यह शब्द आम बोलचाल की भाषा में इतना घुलमिल गया है कि इसके चंगुल से निकलना मुश्किल है। हर कोई इसी 'शायद' के पीछे लगा हुआ है। पुरानी हिंदी फिल्म का एक गाना याद आ रहा है। बोल उसके कुछ यों हैं - 'शायद तेरी शादी का खयाल दिल में आया है, इसीलिए मम्मी ने तेरी मुझे चाय पर बुलाया है।'

तबाही को न्योता

पिछले कई दिनों से पाकिस्तान की फौज और उसके मंत्री परमाणु बम धमकी की रणनीति पर चल रहे हैं, लेकिन वे शायद परमाणु हमले और उसके दुष्प्रभाव को नहीं जानते। निश्चित तौर पर परमाणु बम का दुरुपयोग पाकिस्तान पहले करेगा, मगर उसके बाद पाकिस्तान बच भी सकेगा इसमें संदेह है। एक परमाणु विस्फोट का असर करीब 40 किलोमीटर तक रहता है। अनुमान है कि एक किलोमीटर के दायरे में तो कुछ भी नहीं बचेगा, दो किलोमीटर के भीतर लोग स्वास्थ्य सुविधा न मिलने के कारण नहीं बचेंगे। चार किलोमीटर तक के जीव-जंतु-मनुष्य आग की लपटों में झुलस जाएंगे। नौ किलोमीटर तक भवन और इमारतों के गिरने के कारण बड़ी तादाद में लोग मारे जाएंगे और इससे उत्पन्न हुए विकिरण का दुष्प्रभाव कई वर्षों तक रहेगा। एक बम से उठने वाले धूल व धुएं का गुबार इतना भयानक होगा कि वायुमंडल में फैलकर सूर्य की रोशनी को रोकेगा, साथ ही उस क्षेत्र में कई साल तक वर्षा न होने के कारण फसल नहीं हो पाएगी, भूमि खेती के योग्य नहीं बचेगी।

क्या भुखमरी, तंगहाली झेल रहा पाकिस्तान इस तबाही को झेलने में सक्षम है? भारत तो तीन-चार परमाणु बम हमले सह भी सकता है, कुछ क्षेत्र, करोड़ों लोग खोने के बाद भी वह लड़ने में सक्षम होगा, लेकिन पाकिस्तान सिवाय एक रेत के ढेर से ज्यादा कुछ नहीं बचेगा। न जल होगा, न जीवन। अंतरराष्ट्रीय जगत को भी पाकिस्तान के इस बचपने से सतर्क रहना चाहिए और ठोस कदम उठाते हुए उस पर हर तरह के प्रतिबंध लगाने चाहिए, क्योंकि यह परमाणु युद्ध प्रकृति में भीषण तबाही लेकर आएगा, जिसका दुष्परिणाम केवल भारत-पाकिस्तान नहीं बल्कि पूरे विश्व को उठाना पड़ सकता है। तंगहाली में जीने वाला पाकिस्तान, जिसकी अपना कचरा समेटने तक की हैसियत नहीं, अमेरिका और चीन के कर्ज से दबने के बाद भी 300 किलोमीटर मारक क्षमता वाली गजनवी मिसाइल का परीक्षण करके अपना खौफ दिखाना चाहता है।

बार-बार एक ही मिसाइल का परीक्षण करना बताता है कि युद्ध का खौफ भारत में नहीं बल्कि पाक के हुक्मरान और फौज में है। फिर भी हमारा पड़ोसी एक कंगाल देश बजाय अपने कर्ज समाप्त करने के युद्ध की गीदड़ भभकियां दे रहा है, जबकि पांच दिन युद्ध कर सकने की हैसियत भी अब उसकी नहीं बची। आखिर भारत से नफरत के दम पर कब तक पाकिस्तानी हुक्मरान अवाम पर राज करेंगे?

● *मंगलेश सोनी, मनावर, धार, मध्यप्रदेश*

विरोध का सच

बालाकोट हवाई हमले के वक्त समूचे विपक्ष ने एक स्वर से केंद्र सरकार से इसके सबूत मांगे थे मगर वक्त का पहिया देखिए कि आज स्वयं पाकिस्तान के वजीरे आजम ने यह कहते हुए कि भारत बालाकोट हमले से भी बड़ा हमला करने की फिराक में है, स्वीकार कर लिया कि बालाकोट में हवाई हमला हुआ था। इसी तरह जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से कहा गया कि मोदी ने अनौपचारिक बातचीत में मुझसे पाकिस्तान और भारत के बीच मध्यस्थता करने की अपील की है, तो एक बार फिर समूचे विपक्ष ने हंगामा करते हुए लोकसभा और राज्यसभा नहीं चलने दी थीं। मगर अब ट्रंप की मौजूदगी में प्रधानमंत्री ने यह कह कर कि कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय मुद्दा है और हम इसे अपने स्तर पर सुलझा लेंगे, एक करारा जवाब दिया है। विपक्षी नेताओं को 'कौआ कान ले गया' का राग अब बंद कर देना चाहिए।

● *गोमती मित्र रमेश, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश*

समय की मांग

आज सरकार की प्राथमिकता सभी नागरिकों को गरीबी रेखा से ऊपर लाना, भोजन, पानी, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना है। ये सब सुविधाएं परिवार सीमित होने पर ही संभव हैं इसलिए जनसंख्या नियंत्रण को धार्मिक दायरों से अलग हो कर देखना होगा नहीं तो जनसंख्या वृद्धि को रोकना संभव नहीं हो पाएगा। आज जनसंख्या नियंत्रण समय की मांग है क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों की एक सीमा है।

● *रितेश उपाध्याय, उत्तर प्रदेश*

बेतुके बोल

हमारे देश और समाज को जितना नुकसान तथाकथित धर्मगुरुओं और पोंगापंथियों ने पहुंचाया है उतना शायद किसी युद्ध या महामारी ने भी नहीं पहुंचाया होगा। जब इनकी चर्चा कहीं नहीं होती तो ये कुछ ऐसा बोलते हैं जिससे लोगों का ध्यान उनकी ओर खिंचे। प्रज्ञा ठाकुर उनमें से एक हैं। जब मीडिया में बहुत दिन तक उनकी खबर नहीं आती तो कुछ ऐसा बोल देती हैं जिससे चारों ओर हलचल मच जाए और जब उनके कुबोल पर मीडिया वाले कुछ पूछ देते हैं तो सफाई देती फिरती हैं। बीते सोमवार को दिवंगत अरुण जेटली और बाबूलाल गौर की श्रद्धांजलि सभा में उन्होंने बोल दिया कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का एक-एक कर जाना विपक्ष की 'मारक शक्ति' का परिणाम है।

विज्ञान ने इंसान को कहां से कहां पहुंचा दिया! भारत खुद भी चांद की यात्रा पर है और ये हैं कि अभी कूपमंडूकता से बाहर निकलना ही नहीं चाहते। उस पर तुर्रा यह है कि हम फिर से विश्व गुरु बनेंगे! प्रज्ञा को इतनी छोटी-सी बात नहीं पता कि जन्म और मृत्यु प्रकृति का नियम है, उससे किसी मारक शक्ति का कोई लेना-देना नहीं। भाजपा नेताओं के देहांत के आसपास ही कांग्रेस की बड़ी नेता शीला दीक्षित भी इस संसार को छोड़ कर गईं तो उस पर प्रज्ञा क्या बोलेंगी? संत या संन्यासी का चोला पहन कर जादू टोने की बात करना घोर मानसिक पिछड़ेपन की निशानी है। इससे प्रज्ञा को बाहर निकलना पड़ेगा तभी वे देश के विकास की बात करने की हकदार हैं।

दरअसल, सभी राजनीतिक दलों में कुछ ऐसे नेता हैं जिन्हें पार्टी की ओर से परोक्ष रूप से छूट होती है। जब वे कुछ ऊलजलूल बोलते हैं तो पार्टी का नेता मीडिया में आकर बोल देगा कि पार्टी का उससे कोई लेना-देना नहीं है, ये उनका निजी विचार हैं। इसके बाद बात आई-गई हो जाती है। वैसे प्रधानमंत्री ने अपने नेताओं से कह रखा है कि बयान देते समय संयम बरतें। लेकिन क्या इतना पर्याप्त है? हेमंत करकरे के विषय में प्रज्ञा ठाकुर ने जब निचले स्तर की बात कही थी उसी समय अगर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाती तो उनका मनोबल इतना न बढ़ा होता कि लगातार गैर जिम्मेदार बोल बोलती रहें।

● *सुशील कुमार शर्मा, विश्वास पार्क, दिल्ली*

चौपाल

किसी भी मुद्दे या लेख पर अपनी राय हमें भेजें। हमारा पता है : ए-8, सेक्टर-7, नोएडा 201301, जिला : गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

आप चाहें तो अपनी बात ईमेल के जरिए भी हम तक पहुंचा सकते हैं। आइडी है : chaupal.jansatta@expressindia.com

नई दिल्ली